ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-7* August- 2021
Innovation The Research Concept

मध्यप्रदेश के समाचार पत्र और सामाजिक आन्दोलन वर्ष 1965 ई. से 1975 ई. तक

Newspapers and Social Movements of Madhya Pradesh from 1965 to 1975 AD

Paper Submission: 14/08/2021, Date of Acceptance: 24/08/2021, Date of Publication: 25/08//2021

रिचा दुबे
शोधार्थी,
इतिहास विभाग
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय
जबलपुर, म.प्र., भारत

सारांश

समाज और उसकी संस्कृति निरन्तर परिवर्तनशील रही है प्रत्येक समाज में चाहे-अनचाहे वह प्रक्रिया तीव्र गति से चलती रहती है विष्व में ऐसा कोई भी समाज नहीं है, जो परिवर्तन से अछूता है। भारतीय समाज में तेजी से आबादी बढ़ने के फलस्वरुप वर्तमान समय में बहुत किस्म के नकारात्मक परिवर्तन दिखाई देते रहते है। बेरोजगारी इतनी बढ़ गई कि अपराधों की संख्या में भी तेजी से वृद्धि होती जा रही है, दूसरी तरफ कुछ लोग इतने गरीब होते जा रहे है कि जीवन-यापन के लिए अपनी जरुरत की आम चीजों को भी पूरा करने में सफल नहीं हो पाते है। और फलस्वरुप उन्हें चोरी, डकैती, अपहरण एवं बेईमानी जैसी आपराधिक तरीकों का सहारा लेना पड़ता है।

बढ़ती हुई आबादी के परिणाम स्वरुप विभिन्न प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो रहीं है सरकार एक समस्या का समाधान ढूँढ भी नहीं पाती है कि दूसरी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। मनुष्य जीवन कितना कष्टकर है, इसे प्रमुख दैनिक अखबारों को पढ़ने से समझा जा सकता है। जीवन के मूल्यों में तेजी से इतना बदलाव आ रहा है कि अधिकांश लोग क्षणिक लाभ के लिए कोई भी अनैतिक आचरण अपनाने के लिए हमेषा तैयार रहते हैं।

Society and its culture have been constantly changing, in every society whether or not that process continues at a fast pace, there is no such society in the world, which is untouched by change. Due to the rapid increase in population in Indian society, many negative changes are visible in the present time. Unemployment has increased so much that the number of crimes is also increasing rapidly, on the other hand some people are becoming so poor that they are not able to fulfill even the common things they need for their livelihood. And as a result they have to resort to criminal methods like theft, dacoity, kidnapping and dishonesty.

As a result of the increasing population, different types of problems are arising, the government is unable to find a solution to one problem that other problems arise. How painful human life is, it can be understood by reading major daily newspapers. The values of life are changing so fast that most people are always ready to adopt any immoral behavior for the sake of momentary gain.

मुख्य शब्दः सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक कुरीतियाँ, अनैतिक आचरण, बेरोजगारी, नकारात्मक परिवर्तन, जड़त्व समाज नगरीकरण, आधुनिक शिक्षा प्रणाली।

Social change, social evils, immoral behavior, unemployment, negative change, inertia society, urbanization, modern education system.

प्रस्तावना

किसी भी सामाजिक व्यवस्था में समय के साथ जड़ता स्वाभाविक रुप से चली आती है। जो समाज जितना अधिक पुराना होता जाता है वह उतना ही अधिक जड़वत भी होता जाता है। जड़वत समाज की सबसे बड़ी परेषानी यह है कि उसमें विभिन्न किस्म की कुरीतियों का जन्म समय के साथ स्वयं हो जाता है और वे कुरीतियाँ सामाजिक मूल्यों के इस

प्रकार अभिन्न अंग बन जाती है कि नये परिवंश में नहीं बदलती है। समाज को ऐसा लगता है कि उसे छोड़ देने से उसका भविष्य खतरे में पड़ जायेगा। समाज सुधारकों व अग्रणी लोगों के प्रयासों के बावजूद भी समाज आसानी से बदलना नहीं चाहता है।

जब समाज में कुरीतियों का बोलबाला हो जाता है तो उसे सामाजिक और आर्थिक प्रगति के लिए दूर करना आवश्यक हो जाता है। इसी समस्या को हल करने के उद्देश्य से आधुनिक काल में समाज ने सामाजिक विधानों का सहारा लिया क्यूँकि भारतीय समाज का स्वरुप अत्यंत प्राचीन है, इसलिए इसमें बहुत प्रकार की कुरीतियों का जन्म हो गया था; जो परिवर्तन और प्रगति में बाधाएँ उत्पन्न कर रहीं थी। कुछ कुरीतियों कानून के बावजूद दूर करने के लिए सरकार ने समय-समय पर विभिन्न प्रकार के अधिनियमों को पारित किया गया जिनसे सामाजिक परिवर्तन को गति मिलती है।

सामाजिक समस्याओं को सुलझानें तथा विघटित सामाजिक सम्बन्धों को सुव्यवस्थित करने के उदेश्य से सरकार द्वारा बनाए गए अधिनियमों को सामाजिक विधान या कानून कहते है।

इन विधानों का उदेश्य सामाजिक कुरीतियों पर प्रतिबन्ध लगाना तथा समाजिक सुधार व कल्याण करना होता है। ताकि सामाजिक विकास के लिए अच्छे वातावरण का निर्माण हो सके। सरकार द्वारा बनाए गए अधिनियमों या विधानों को अनिवार्य रुप से सभी को स्वीकार करना होता है और इस प्रकार सामाजिक सुधार के कार्यक्रम को एवं उसके माध्यम से सामाजिक परिवर्तन को एक निश्चित दिशा मिलती है। अतः सामाजिक विधान राज्य द्वारा पारित किए गए वे कानून या अधिनियम हैं जो सामाजिक कुरीतियों को दूर करने, सामाजिक विघटन को रोकने तथा समाज-सुधार तथा परिवर्तन के अनुकूल परिस्थितियों उत्पन्न करने के उद्देश्य से बनाए जाते हैं।

विषय प्रवेश

आधुनिक शिक्षा-प्रणाली, नगरीकरण, आद्यौगीकरण, यातायात एवं पत्रकारिता के माध्यम से सामाजिक आन्दोलनों को बढ़ावा देने का कार्य किया है। आधुनिक युग में लोकतन्त्र का बहुत तेजी से विकास और प्रचार हुआ। लोकतान्त्रिक मूल्यों ने भी सामाजिक आन्दोलन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

भारत के संदर्भ में सामाजिक आन्दोलनों का विशेश महत्व है। भारतीय समाज जाति, वर्ग, नृजातीयता, धर्म और भाषा के स्तर पर स्तरित रस है। सामाजिक और आर्थिक असमानताओं की जड़ें बहुत गहरी हैं। अन्तर-सामुदायिक सम्बन्ध, विवाह और धार्मिक सांस्कृतिक व्यवहार में वर्तमान जीवन के मूल्यों में कठोरता पायी जाती है। ऐसी संरचनात्मक और सांस्कृतिक स्थितियों एवं कठोरताओं के विरुद्ध भारत का इतिहास सामाजिक आन्दोलनों से भरा हुआ है। इन बाधाओं के कारण न तो लोग ऊपर उठ सकतें हैं और न ही अपनी वांछित दिषाओं में प्रगति कर सकते हैं।

इस प्रकार सामाजिक आन्दोलन सामान्यतया सामाजिक संरचना की ओर उठा हुआ एक कदम है। दूसरी ओर सामाजिक आन्दोलन कभी-कभी परिवर्तन विरोधी भी होते हैं, जो ऐसे प्रयत्नों का विरोध करते हैं, और यथास्थिति को बनाए रखनें के लिए हर संभव प्रयत्न करते हैं, जैसे दलितों और महिलाओं के लिए आरक्षण का विरोध।

सामाजिक आन्दोलनों में वैचारिकी का एक वृहत पुंज है जिसका उद्देष्य सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं का पुनर्निमाण करना होता है। इसी पर सामाजिक आन्दोलनों के कार्यक्रमों को निर्धारित किया जाता है। आन्दोलन कभी भी एक निरन्तर प्रक्रिया या घटना नहीं है। वह तो जनसंख्या के एक महत्वपूर्ण अनुभाग द्वारा कुछ विशिष्ट पहलुओं या समाज की प्रक्रिया विधि के विरुद्ध संकेत करते हैं।

दैनिक जागरण (1953)

'दैनिक जागरण' रीवा का प्रथम दैनिक पत्र था, जिसे सितम्बर 1953 को श्री गुरुदेव गुप्त ने निकाला। कानपुर, झांसी से प्रकाशित होने वाले दैनिक जागरण की कड़ी में श्री गुप्त ने रीवा से भी प्रारंभ किया। प्रारंभ में इसके संपादक मंडल में पूर्णचन्द्र गुप्त, गुरुदेव गुप्त, राजेन्द्र गुप्त थे। यह पत्र 225/2 व्यंकट रोड, रीवा स्थित 'दैनिक जागरण' प्रेस से छपकर निकलता था। 'दैनिक जागरण' ने समाचार पत्र जगत में नई क्रांति लायी। लोकतंत्र के समर्थक इस पत्र ने सामाजिक चेतना, बौद्धिक प्रसार में क्रांतिकारी भूमिका निभाई। इस पत्र की सम्पादकीय टिप्पणी, विचारोŸोजक लेख एवं पठनीय समाचार ने अखबारों की विश्वसनीयता को बढ़ाया।

दैनिक जागरण समाज में व्याप्त असमानता, अन्धविश्वास, रुढ़िवादिता, कुरीतियों के खिलाफ भी वैचारिक लड़ाई लड़ी। पत्र ने समय-समय पर सामाजिक विद्रूपताओं के खिलाफ आवाज उठायी। इस पत्र की चेतना समाज परक चेतना थी, यही कारण था कि इसने सामाजिक सुधार की बातें ज्यादा कहीं। सामाजिक कुरीतियों, विद्रुपताओं के संदर्भ में इस पत्र की कुछ टिप्पणियाँ दृष्टव्य है-

'दैनिक जागरण' देश की जन-समस्याओं को भी मुखर करता था। 14 नवंबर 1953 के अग्रलेख में बढ़ती हुई जनसंख्या पर चिन्ता प्रकट करते हुये कहता है-

'देष की बढ़ती हुई जनसंख्या सदा ही हमारे सम्मुख एक चिन्ता का प्रश्न रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् यह प्रश्न और भी अधिक गंभीर रुप से नेताओं के समक्ष अर्थशास्त्र के मोटे सिद्धांतों देश के अनुसार ज्यों-ज्यों किसी की जनसंख्या में वृद्धि होती है, त्यों-त्यों उसकी खाद्य उत्पादन की शक्ति का ह्रास होता है। यह सिद्धांत हमारे देश में नग्न सत्य के रुप में विद्यमान

है। देश को यदि सुखी और सम्पन्न रखना है, यदि देश में प्रत्येक व्यक्ति के लिये भोजन, वस्त्र और निवास की समुचित व्यवस्था करना है, तो इस बढ़ती आबादी पर रोक लगाना होगा। यदि देश और सरकार का ध्यान इस ओर न गया तो निश्चय ही देश का भविष्य अंधकार में पड़ जायेगा और प्रकृति को फिर अपना खेल-खेलने का अवसर मिलेगा। आज नागरिकों को अपना कर्Ÿाव्य पालन करने की आवश्यकता है, वे इस गंभीर खतरे को समझे, देश के उत्पादन में वृद्धि करें और अपने पर संयम रखे।

इस पत्र में समय-समय पर सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक स्थितियों को प्रकट करते हुए लेखादि छपते थे। कई स्थाई स्तम्भ भी चले जिसमें 'मन की मौज' काफी चर्चित रहता था। इस पत्र की सार्थक टिप्पणियां एवं तीखी बातें सामाजिक, राजनैतिक विद्रूपताओं का खुलासा करती थीं।

विंध्य संदेश (1960)

स्वतंत्रता के पश्चात् विन्ध्यक्शेत्र में जिन समाचार पत्रों ने बौद्धिक क्रान्ति का बीजारोपण किया उनमें 'विंध्य संदेश' का नाम भी अग्रणीय पंक्तियों में आता है। यह पत्र प्रारम्भ में पाक्षिक रुप से निकला बाद में साप्ताहिक रुप से प्रकाशित हुआ। इस पत्र का जन्म 2 अक्टूबर 1960 को हुआ, इसे निकालने का श्रेय विंध्य अंचल के जागरुक पत्र श्री इष्टदेव द्विवेदी को जाता है। इस पत्र ने अपने प्रवेशांक से ही विन्ध्य के गौरव की पुर्नस्थापना का व्रत लिया एवं विंध्य की समस्याओं को मुखारित किया। प्रवेशांक की सम्पादकीय में श्री इष्टदेव द्विवेदी ने इसके उद्देश्यों को बताते हुये लिखा-

'इस विंध्य संदेश का प्रकाशन इसी उद्देश्य से किया गया है कि वह भारत को फिर से वही सन्देश दे, वही प्रेरणा दे जिसमें प्राचीन विंध्य की प्रेरणायें निहित हैं। हमने संसार को भारत को सुख समृद्धि का संदेश दिया था, और आज भी देंगे हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि विंध्य संदेश अपने दायित्व को पूरा करने में समर्थ होगा और विंध्यवासी अपने अधिकार, हक और शक्ति को पहचान कर आगे आयेंगे, अपनी उन्नति के लिये, अपनी समृद्धि के लिये और अपनी संतानों के भावी सुख सुविधा के लिए इतना ही नहीं वे भारत को भी मार्ग भी होंगे।

इस तरह 'विंध्य संदेश' अपने उदेश्यों कर्Ÿाव्यों को लेकर प्रस्तुत हुआ। इस पत्र ने अपने प्रथम अंक में ही विंध्य की समस्याओं का खुलकर चित्रण किया एवं इसके विकास के लिये अनेक योजनाओं की मांग की। प्रकाशित समाचारों में विंध्य क्षेख में रेलवे लाईन की आवश्यकता' 'रीवा में मेडिक कॉलेज तथा विश्वविद्यालय की स्थापना तीसरी याकजना में हो' यदि समाचार विंध्य के विकास एवं प्रगति हेतु लिखे गये थे।

संक्रामक बीमारियों के फैलने की आशंका रीवा, 1 दिसम्बर, इधर लगभग एक सप्ताह से नगरपालिका व हरिजनों की कुछ मांगों को लेकर एक विवाद पैदा हो गया है फलस्वरुप नगर की सफाई का कार्य बिल्कुल ढप्प हो गया है। आम सड़कों पर कूड़े के ढ़ेर लगे हुए है, नालियां बजबजा रही हैं। हरिजनों की मांगों में क्या औचित्य है यह तो शासन व नगर पालिका के सोचने का प्रश्न है, किन्तु इस विवाद में जनता के सार्वजनिक जीवन के साथ खिलवाड़ खेलना एक शर्मनाक चीज है।

इस तरह 'विंध्य संदेश' की चेतना समाज के बहुपक्षीय स्वरुप में केन्द्रित थी। समाज गतिशीलता हो, इसके अवरोधों को समाप्त किया जाये यही प्रश्न इस पत्र का मुख्य उदेश्य था। प्रशासन की उदासीनता के खिलाफ भी यह पत्र अपनी निर्भीकता का परिचय देता था। पुलिस प्रशासन पर कटाक्ष करते हुये यह पत्र लिखता है-

'रीवा नगर में जुआ एवं चोरी जैसे अपराध दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है, जिसकी रोकथाम में नगर पुलिस प्रशासन बिल्कुल निकम्मा एवं अपंग साबित हो रहा है।'

समाचार पत्र जनता और शासक के बीच की कड़ी होते हैं। दोंनो के बीच तदात्मय स्थापित करना समाचार पत्र का कर्Ÿाव्य होता है। विंध्य संदेश इस परम्परा का स्वस्थ निर्वाहन करता है। वह जनता और शासन के बीच समन्वय की स्थापना करता है ताकि राष्ट्र प्रगतिशील बन सके।

सम्पर्क सूत्र (1967)

16 जून 1967 में भगवान दास सफाड़िया ने पाक्षिक सम्पर्क सूत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया। यह पत्र बौद्धिक प्रधान था। इस पत्र की सम्पादकीय काफी सशक्त एवं धारदार रहती थी। भाषा तीखी एवं मोहक थी। इस पत्र का मोटो वाक्य न मनुशात् श्रेष्ठतरं हि किंचित मुखपृष्ठ पर लिखा होता था। अपने प्रथम अंक के सम्पादकीय में यह पत्र लिखता है-

'आजादी मिलने के बाद जहाँ एक ओर चीजों की कीमतें आसमान को छूने के लिये होड़ लगा बैठी, दिन में कम किन्तु रात में अधिक बढ़नें लगी, वही मनुष्यता का मूल्क कई मानों में घटा है। एक स्वतन्त्र राष्ट्र के नागरिकों के लिये सिर उठाकर जीने के जो अधिकार हैं आत्म सम्मान और गौरव की जो प्रचलित मान्यतायें हैं। उनके लिये कहा जा सकता है कि किसी अर्थ में यह सब अधिकार राजनैतिक दृष्टि से हमें प्राप्त हैं, और अनका हम कामोवेश उपयोग भी कर रहे हैं, किन्तु आर्थिक दृष्टि से हम पहले से भी अधिक क्षीण हो गये हैं।

जिस देश में भुखमरी से अधिक महत्व इस समाचार का हो कि अमुक विशिष्ट व्यक्ति को राजदूत, गवर्नर या किसी अन्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया है, जहाँ पुलिस की गोली से इन्सान, कुŸो और बिल्ली की मौत मरते रहे और हमारे रोयें खड़े न हों, हम इस कान से सुनें और उस कान से निकाल दें उस देश की आत्मा में अवश्य कही घुन लग गया है।'

'सम्पर्क सूत्र' की भाषा काफी सशक्त एवं जीवन्त होती थी।

ओरछा टाइम्स (1973)

1 मई 1973 हरगोविंद त्रिपाठी 'पुष्प' जी ने साप्ताहिक ओरछा टाइम्स का प्रकाशन टीकमगढ़ से किया। यह पत्र 12 जून 1975 से दैनिक रुप से निकल रहा है। अपने प्रवेशांक (1973) के अंक में ही इस पत्र ने शोषण और अन्याय के खिलाफ जेहाद छेड़ते हुये प्रथम पेज पर यह समाचार छापा-

'राजनीति के ठेकेदारों
मजदूरों को अपने चुंगल से मुक्त करो?
मई दिवस की मांग'

'आजादी के पच्चीस वर्शों के बाद भी मेरे देश की स्थिति क्या है कि सौ रुपये के श्रण में मजदूरों को अपनी पीढ़ियां गुजारनी पड़ रही है। अभी भी उन्हें भरपेट दो जून का खाना और तन ढकने के लिये कपड़े नहीं मिल पा रहे है। मजदूरों को, जिनके श्रम से गगनचुम्बी प्रसाद, संसद भवन, विधान मण्डलों के भवन तैयार हुये अपना सिर ढ़कने के लिये छापा नहीं है। लाखों लोग फुटपाथों पर जिन्दगी काट रहे हैं।

इस तरह 'ओरछा टाइम्स' ने अपनी बानगी प्रारम्भ से ही दिखा दी। यह पत्र प्रगतिशील विचारों की अगुआयी करता था। शोषण मुक्त समाज की कल्पना ही इस पत्र का आदर्श था। प्रवेशांक की सम्पादकीयय जो 'हलफनामा' शीर्षक से लिखी गई है, काफी सटीक एवं जीवन्त है-

'आज पूरे देश में गरीबी, भ्रष्टाचार, बेकारी, भुखमरी, निराशा और कुण्ठा का चारों ओर सम्राज्य है, इससे बचने का कोई रास्ता किसी को नहीं दिखता और न कोई देखना चाहता है। जो कल हमें इस सबसे बचाने का बायदा कर गये थे, वे इस तरह उलझ गये स्वार्थों में कि हमारी आवाज भी शुरु नहीं कर सकते। कभी जोर से पुकारा भी हमने तो गद्धार और प्रतिक्रियावादी की संज्ञा मिली। यह दुर्भाग्य है मेरे देश का कि देश भर के असमाजिक तत्व रचना का भार संभाले हैं। बींसवी सदी का सबसे बड़ा फरेब चल रहा है, मेरे देश में कभी गरीबी हटाओ, कभी हरित क्रांति कभी खेत क्रांति के नाम से। यह सब उपक्रम ठीक उसी प्रकार के हैं जैसे कि कोपर खो जाने पर हम डण्डा में हाथ डालते हैं।'

इस पत्र ने यहाँ की समस्याओं और प्रगति को मुखारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अध्ययन के उद्देश्य

सामाजिक आन्दोलन की क्रियाएँ सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन लाना चाहती हैं जिससे कि समाज के मूल्य और सोच में परिवर्तन हो सके। नयी व्यवस्था नये मूल्यों के साथ स्थापित कर सकें। सामाजिक आन्दोलन में विचार एक महत्वपूर्ण तत्व है, जो इसे स्वरुप प्रदान करता है। उसे संगठित और क्रियाशील बनाने में सहायक होता है। इसके साथ ही उसे अन्य छोटी-बड़ी घटनाओं से पृथक भी करता है। कोई भी आन्दोलन जिसकी नींव में कोई विचारधारा नहीं है, वह न तो बहुत दिनों तक चल सकता है और न ही उसे कोई बड़ी सफलता की प्राप्ति हो सकती है। देश में जितने भी आन्दोलन हुए हैं चाहे वे सामाजिक हों अथवा राजनीतिक उनके पीछे एक ठोस विचारधारा रही है। एक सशक्त विचारधारा एक मजबूत सामाजिक आन्दोलन को बढ़ाने में सहायक बनती है। जैसे नवजागरण का आन्दोलन, स्वतंत्रता-संग्राम, किसान आन्दोलन आदि।

निष्कर्ष

स्वतंत्रता के पश्चात् एक नये वातावरण में श्रमिक-आन्दोलन और श्रमिक संगठन श्रमिकों के कल्याण के लिए संकल्पित हुए। ये समाज की व्यवस्था को इस रुप में परिवर्तित करने के लिए प्रयासरत है जिसमें श्रमिकों का जीवन-स्तर ऊँचा हो सके। उन्हें इतना वेतन प्राप्त होना चाहिए कि उनके बच्चे शिक्षित हो सकें। उनका स्वास्थय ठीक रह सके। उन्हें निवास की सुविधाएँ मिल सके। काम की दशाओं में परिवर्तन होना चाहिए। उन्हें पेंशन, ग्रेच्यूटी और बोनस का लाभ मिलना चाहिए। श्रमिकों की सामाजिक सुरक्शा का दायित्व सरकार को पूर्ण करना चाहिए।

सामाजिक सुधार आन्दोलन न उन्नीसवीं सदी के पूर्वाद्ध में अहम भूमिका का निर्वहन किया है। भारतीय समाज में सदियों से परम्परावादी एवं रुढ़िवादी विष्वासों का जाल बिछा हुआ था। सामन्ती समाज ने और पुरोहितवादी जड़ संस्कृति ने सामाजिक चेतना को उभरने नहीं दिया। यही कारण है कि भारत आर्थिक दृष्टि से निर्धन और दरिद्र बना रहा। दलित जातियों और स्त्रियों के साथ धर्म के नाम पर अत्याचार किए जाते रहे। निर्बल वर्ग को पूछने वाला कोई नहीं था। इस उत्पीड़न व्यवस्था में निर्धन, पिछड़ी जातियों, अनुसूचित जातियों और स्त्रियों पर धर्म के नाम पर अत्याचार किए जा रहे। इन शोषणों के विरुद्ध समाज सेवकों, विद्वानों, चिन्तकों और धार्मिक नेताओं ने समाज सुधार आरम्भ किए। यह वह सामाजिक व्यवस्था थी जहाँ अत्याचार, उत्पीड़न, शोषण पराकाष्ठा पर था। इसके बावजूद अंग्रेजी शासनकाल में प्रगति और विकास के सम्बन्ध में जागरुकता उत्पन्न होने लगी थी।

इन भारतीय सामाजिक कुरीतियों, अन्धविष्वासों और नेता और समाज सुधारक राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, गोविन्द रानाडे आदि थे। सुधार आन्दोलनों ने देष में सामाजिक परिवर्तन की ठोस जमीन तैयार की।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *1. जे.पी.सिंह, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन 21 वीं सदी में भारत द्वितीय संस्करण, PHI~ Learning Private Limited, Delhi- 110092, वर्ष-2019, पृष्ठ संख्या-385*
2. *डॉ. महेश शुक्ला, विंध्य की पत्रकारिता के विविध आयाम, कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, नई दिल्ली, वर्ष-2001, पृष्ठ संख्या-158.*
3. *एन.सी. पंत, हिंदी पत्रकारिता का विकास, राधा*

पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, वर्ष-1994, पृष्ठ संख्या-258.
4. विजयद श्रीधर, शब्दस, मध्यप्रदेश में पत्रकारिता के 150 वर्ष, माधवराव सप्रे संग्रहालय, भोपाल, वर्ष-1999, पृष्ठ संख्या-155.
5. डॉ. महेश शुक्ला, विंध्य की पत्रकारिता के विविध आयाम, कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, नई दिल्ली, वर्ष-2001, पृष्ठ संख्या-165.
6. विभाश कुमार झा, हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास, छत्तीसगढ़, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, वर्ष-2011, पृष्ठ संख्या-33.
7. डॉ. महेश शुक्ला, विंध्य की पत्रकारिता के विविध आयाम, कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, नई दिल्ली, वर्ष-2001, पृष्ठ संख्या-170.
8. डॉ. सुरेन्द्र पाठक, हिन्दी पत्रकारिता और समाज, निर्मल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, वर्ष-2017, पृष्ठ संख्या-131.
9. शिव अनुराग पटैरिया, डॉ. राकेश पाठक, हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, वर्ष-2016, पृष्ठ संख्या-102.
10. अनिल सौमित्र, डॉ. रत्ना वर्मा, हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास ग्रामीण, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, वर्ष-2011, पृष्ठ संख्या-18.